i , . . .

मं• भो.वि./पानी/78→86/31965.=-चूंकि इरियाणा के राज्यसात की राज्य है कि के चरक कार्मीमाइल इण्डिया प्रा॰िलं॰ जोशासी रोड, पावटी गाँव, जीउटी रोड़, समालखा (करनाक) के श्रमिक श्री मंदी कुमा सार्फत फैक्ट्री वर्कश्च यूनियन, विहोली रोड़, समालखा, (कश्चाल), नथा उसके प्रवश्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मस्मले में कोई ग्रीडोगिक विवाद है:

श्रीर नृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैन निर्दिट करना बांछनीय समझने हैं ;

इसलिए, अब, ऑशंगिक विराद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) है खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राष्ट्रणाल उसके द्वारा सक्तारी अधिन्कता संग्राह्म की अधिन्यम की धारा 7 के अधीन गठिन थम न्यायालय, अम्लाला, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन माम में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

पया श्री मोदी क्मार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राह्य का हकदार है ? संब्योतिव /पानी/७५-86/3.471.—चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राप है कि मैं व चाक फामें सिकल प्राव्व लिंक जोरासी रोड़, पावटी गांव, जीव्टीव रों, समालखा (कप्ताल) के श्रीमक श्री भारदा प्रसाद मार्फत फैक्ट्री वर्करज यूनियन बिहोली गेट, समालखा (कप्ताल) तथा उसके प्रवन्त कों के भश्य इपनें इसके बाद जिखिन मामने में कोई खीद्योगिक विवाद है; सीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेन निविष्ट करना बांछनीय समझते हैं:

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की अस्त 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपान इसकें द्वारा सरकारी अधिगृक्ता संक 3(44)34-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रेंत 1984, द्वारा उक्त पित्रियम की बारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायात्रय, अस्वादा, को विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे विवाद सामला न्यायिवर्णय एवं पंचाट तीन मास में देते हेतु निविध्द करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच वा तो किवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री शारदा प्रसाद की सेवाशों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? स० श्रो • वि०/शाई • डी • ८८ – ८८ / ३१९७७ — चंकि हिन्याण के राज्यपाल की राय है कि मैं • (१) एस.ई. हाऊ सिंग बोर्ड हिर्याणा, एस० सी० श्रो • नं • १२ १ १२७ में सी. चण्डीगड़, (२) फार्यकारी सनियत्ता, हाऊ सिंग बोर्ड, हिर्याणा, कोठी नं • ३४, हाऊ मिंग बोर्ड कालोनी जिवजन, पानीपत के श्रीमक श्री मुख्यमल युद्ध श्री मांगे राम, गांव व डा० वारणाम तह • पानीपत, करनाल तथा उसके प्रवत्यकों के मध्य इसके इसके बाद लिखित मामले में कोई श्री छोषिक विवाद है;

ग्रीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्धित करनः बाळनाय समझते हैं;

इसलिए, ग्रज, ग्रीडंगंगक विवाद ग्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 भी उपदारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्रावितयों का प्रयोग करने हुए, हरिशाणा में राज्यपाल इसके द्वारा गरकारी श्रिधिस्चना मंह 3(44) ::-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रील, 1984, द्वारा उक्त ग्रीधिनियम की धारा 7 के ग्राधीन गंठन व्यव न्याधालया प्रम्याला, की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत निर्दिष्ट करते हैं जो कि उगत प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद में असंगत प्रथम गंगीधित मामला है :---

्या श्री स्रजमल की सेवाक्रों का समापन स्थायोचित तथा ठीक है 🏌 यदि नही, तो यह किस राहत का हकदार है ?

स० ओ० वि०/हिसार/११3-86/३१७०/--चिक हरियाणा के राज्यपाल की नाय र कि स० (१) चैयरमैन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चंडागढ़ (१) एक्सीयन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चंडागढ़ के श्रीमक श्री तामेश्वर प्रसाद, पुत्र श्री राम दयाल मार्फत मजदूर एकता यूनियन, नागोरी केट, हिसार तथा उसके प्रनत्वकों के सध्य दसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ब्रोडोगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु तिर्दिष्ट करता बांछनीय समझते हैं ;

इसिलए, भव, श्रीशोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, वी धारा 10 की ापश्चारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवितयों कर प्रयोग वसते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्यसी श्रीश्मित्रता में, प्रतान - नश्चम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी भ्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गटित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उत्तर प्रवासकों तथा श्रमिक के बीच या हो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अयवा सर्वाधत मामला है :--

क्या श्री रामेश्वर प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस <mark>राहत का</mark> हकदार है ?